# स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा (कला/विज्ञान/वाणिज्य) खण्ड–एक

## प्रसिद्ध काव्य पंक्तियाँ और उनके रचनाकार

– डॉ. मुन्ना साह

| काव्य पंक्तियाँ | रचनाकार |
|---|---|
| 1. प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी | – रैदास |
| 2. अपना मस्तक काटि कै वीर हुआ कबीर | – दादू |
| 3. अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम | – मलूकदास |
| 4. रुकमिनी पुनि वैसहि मरि गई। कुलवंति सत सों सति भई | – कुतुबन |
| 5. बलंदीप देखा अंगरेजा। वहां जाइ जेहि कठिन करेजा | – उसमान |
| 6. गोद लिए हुलसी फिरै तुलसी सो सूत होय | – रहीम |
| 7. दुलहिन गावहु मंगलचार, हम घर आए राजा राम भरतार | – कबीर |
| 8. ढोल गंवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी | – तुलसीदास |
| 9. लोटा तुलसी दास को, लाख टका को मोल | – होलराय |
| 10. अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल | – सूरदास |
| 11. सूर कवित्त सुनि कौन कवि नहिं सिर चालन करै | – नाभादास |
| 12. अनुखन माधव माधव सुमिरत सुंदर भेलि मधाई | – विद्यापति |
| 13. मो मन गिरिधर छवि पै अटक्यौ | – कृष्णदास |
| 14. या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहुं पुर को तजि डारौ | – रसखान |
| 15. जो नर दुख में दुख नहि मानै | – नानक |
| 16. आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की | – रामानन्द |

17. मन रे परसि हरि के चरन — मीराबाई

18. तुलसी गंग दुवौ भए सुकविन के सरदार — भिखारी दास

19. उत्तम जाति है ब्राह्मनी, देखत चित्त लुभाय।
परम पाप पल में हरत, परसत वाके पाय।। — रहीम

20. मो सम कौन कुटिल खल कामी — सूरदास

21. पुष्टिमार्ग को जहाज जात है — विटठ्ल दास

22. सन्तन को कहा सीकरी सो काम — कुम्भनदास

23. परहित सरिस धर्म नहि भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।। — तुलसीदास

24. लरिकाई को प्रेम कहो अलि! कैसे छूटे? — सूरदास

25. नागमति चितउर पथ हेरा, पिउ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा। — जायसी

26. नयन जो देखा कंवल भा, निरमल नीर सरीर।
हंसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नग हीर।। — जायसी

27. संतौं भाई आई ग्याँन की आंधी रे। — कबीर

28. दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना। — कबीर

29. जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान — कबीर

30. दिन भर रोजा रखत हैं राति हनत है गाय।
यह तो खून वह बंदगी कैसे खुशी खुदाय।। — कबीर

31. उर में माखन चोर गड़े
अब कैसहु निकरत नहिं ऊधो! तिरछै हवै जो अड़े। — सूरदास

———————————————————— ••• ————————————————————